International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 5, July-August 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

# गांधी जी के सर्वोदय की अवधारणा की वर्तमान में प्रासंगिकता

**Dr. Virendra Singh Verma**

Associate Professor, Department of Political Science, Hindu College, Moradabad, Uttar Pradesh, India

## ABSTRACT

गांधीजी ने कहा था "मैं अपने पीछे कोई पंथ या संप्रदाय नहीं छोड़ना चाहता हूँ।" यही कारण है कि सर्वोदय आज एक समर्थ जीवन, समग्र जीवन और संपूर्ण जीवन का पयार्य बन चुका है। आज के दौर में पूरा विश्व एक ऐसे ही समाज की खोज में है जहाँ शोषण , वर्ग, जाति आदि की कोई जगह न हो। आज आधुनिकता की अंधाधुंध दौड़ में दौड़ रहे विश्व के सभी देशों की गति पर कोरोना वायरस ने ब्रेक लगा दिया है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि कोरोना वायरस का तेज़ी से प्रसार इसी दौड़ का परिणाम है। कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने के लिये लॉकडाउन की व्यवस्था अपनाई गई है। इस व्यवस्था को प्रभावी बनाने के लिये गांधीवादी दृष्टिकोण पर आधारित स्वदेशी, स्वच्छता और सर्वोदय की अवधारणा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। सामान्यतः महात्मा गांधी को औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध के विरुद्ध संघर्ष करने वाले योद्धा के रूप में देखा जाता है, किंतु यदि गहराई से देखें तो गांधी ने न केवल स्वतंत्रता की लड़ाई बल्कि उन्होंने हर समय भारतीय सभ्यता को श्रेष्ठता दिलाने का प्रयास भी किया और विश्व व्यवस्था के समक्ष भारतीय सभ्यता का प्रतिनिधित्व किया।

पश्चिमी सभ्यता के वर्चस्व वाले उस युग में गांधी ने भारतीय सभ्यता को श्रेष्ठ बताते हुए उसे संपूर्ण विश्व के लिये एक विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया। रामधारी सिंह 'दिनकर' ने गांधी के बारे में उचित ही लिखा है-

"एक देश में बांध संकुचित करो न इसको
गांधी का कर्तव्य क्षेत्र, दिक् नहीं, काल है
गांधी है कल्पना जगत के अगले युग की
गांधी मानवता का अगला उद्विकास है"

इस आलेख में गांधीवादी दृष्टिकोण की व्यापकता को समझते हुए, वैश्विक महामारी COVID-19 के प्रसार को रोकने में सहायक स्वदेशी, स्वच्छता और सर्वोदय की अवधारणा का मूल्यांकन करने का प्रयास किया जाएगा।

***How to cite this paper:*** Dr. Virendra Singh Verma "Current Relevance of Gandhi's Concept of Sarvodaya" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-5, August 2022, pp.812-815, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd50573.pdf

**IJTSRD50573**

Copyright © 2022 by author (s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

## परिचय

गांधीवादी दृष्टिकोण महात्मा गांधी द्वारा अपनाई और विकसित की गई उन धार्मिक-सामाजिक विचारों का समूह जो उन्होंने पहली बार वर्ष 1893 से 1914 तक दक्षिण अफ्रीका में तथा उसके बाद फिर भारत में अपनाए गए थे।गांधीवादी दर्शन न केवल राजनीतिक, नैतिक और धार्मिक है, बल्कि पारंपरिक और आधुनिक तथा सरल एवं जटिल भी है। [1,2] यह कई पश्चिमी प्रभावों का प्रतीक है, जिनको गांधीजी ने उजागर किया था, लेकिन यह प्राचीन भारतीय संस्कृति में निहित है तथा सार्वभौमिक नैतिक और धार्मिक सिद्धांतों का पालन करता है।गांधीवादी दृष्टिकोण आदर्शवाद पर नहीं, बल्कि व्यावहारिक आदर्शवाद पर ज़ोर देती है।गांधीजी का दृष्टिकोण विभिन्न प्रेरणादायक स्रोतों व नायकों जैसे- भगवद्गीता, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, बाइबिल, गोपाल कृष्ण गोखले, टॉलस्टॉय, जॉन रस्किन आदि से प्रभावित था।गांधीजी पहले ऐसे भारतीय थे जिन्होंने वर्ष 1909 में अपनी पुस्तक 'हिंद स्वराज' में मशीनीकरण के भयावह रूप को रेखांकित करते हुए 'स्वदेशी' की महत्ता को बताया। गांधीजी ने रस्किन की पुस्तक 'अंटू दिस लास्ट' से 'सर्वोदय' के सिद्धांत को ग्रहण किया और उसे जीवन में उतारा। गांधीजी के लिये 'स्वच्छता' एक बहुत ही महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा था। वर्ष 1895 में जब ब्रिटिश सरकार ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों और एशियाई व्यापारियों से उनके स्थानों को गंदा रखने के आधार पर भेदभाव किया था, तब से लेकर जीवनभर गांधीजी लगातार स्वच्छता पर जोर देते रहे। स्वदेशी शब्द संस्कृत से लिया गया है और यह संस्कृत के दो शब्दों का एक संयोजन है। 'स्व' का अर्थ है स्वयं और 'देश' का अर्थ है देश। स्वदेशी का अर्थ अपने देश से है, लेकिन व्यवहारिक संदर्भों में इसका अर्थ आत्मनिर्भरता के रूप में लिया जा सकता है।गांधी जी का मानना था कि इससे स्वतंत्रता (स्वराज) को बढ़ावा मिलेगा, क्योंकि भारत का ब्रिटिश नियंत्रण उनके स्वदेशी उद्योगों के नियंत्रण में निहित था। [3,4] स्वदेशी भारत की स्वतंत्रता की कुंजी थी और महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों में चरखे द्वारा इसका प्रतिनिधित्व किया गया था। आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक माने जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपने लेखन से स्वदेशी की अलख जगाई। वर्ष 1905 का बंग-भंग विरोधी आंदोलन भी स्वदेशी की भावना से

ओत-प्रोत था जब बंगाल में विदेशी वस्तुओं की होली जलाई गई और उनके बहिष्कार पर बल दिया गया। इस स्वदेशी भाव को राष्ट्रीय स्तर पर बहुआयामी स्वरूप प्रदान करने का कार्य वर्ष 1920 में महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन प्रारंभ करके किया। उन्होंने इसे न केवल विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तथा उनके अग्निदाह तक सीमित रखा, बल्कि उद्योग-शिल्प, भाषा, शिक्षा, वेश-भूषा आदि को स्वदेशी के रंग में रंग दिया।परंतु स्वतंत्रता के बाद गांधी जी की मृत्यु के साथ ही उनके स्वदेशी की अवधारणा भी लुप्त होने लगी और आधुनिक भारत के मंदिरों के नाम पर 'स्वदेशी धरती' पर विदेशी मशीनों को लाकर बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियां स्थापित की जाने लगीं। नतीजतन, देश के तमाम हस्त उद्योग, कुटीर उद्योग लुप्त होते चले गए, घर-घर से चरखा गायब होता चला और शहरों से लेकर गाँवों तक देशी-विदेशी फैक्ट्रियों के उत्पादित माल बाज़ार में छा गए। हस्त उद्योग, कुटीर उद्योग के लुप्त होने से भारत ने अपने विनिर्माण क्षेत्र को खो दिया। [5,6]

## विचार-विमर्श

भारत में गांधी जी ने गांव की स्वच्छता के संदर्भ में सार्वजनिक रूप से पहला भाषण 14 फरवरी 1916 में मिशनरी सम्मेलन के दौरान दिया था। इस सम्मेलन में गांधी जी ने कहा था 'गाँव की स्वच्छता के सवाल को बहुत पहले हल कर लिया जाना चाहिये था।'गांधी जी ने स्कूली और उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में स्वच्छता को तुरंत शामिल करने की आवश्यकता पर जोर दिया था।गांधीजी ने रेलवे के तीसरे श्रेणी के डिब्बे में बैठकर देशभर में व्यापक दौरे किए थे। वह भारतीय रेलवे के तीसरे श्रेणी के डिब्बे की गंदगी से स्तब्ध और भयभीत थे। उन्होंने समाचार पत्रों को लिखे पत्र के माध्यम से इस ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया था। 25 सितंबर 1917 को लिखे अपने पत्र में उन्होंने लिखा, 'इस तरह की संकट की स्थिति में तो यात्री परिवहन को बंद कर देना चाहिये। जिस तरह की गंदगी और स्थिति इन डिब्बों में है उसे जारी नहीं रहने दिया जा सकता क्योंकि वह हमारे स्वास्थ्य और नैतिकता को प्रभावित करती है।'वर्ष 1920 में गांधीजी ने गुजरात विद्यापीठ की स्थापना की।[7,8] यह विद्यापीठ आश्रम की जीवन पद्धति पर आधारित था, इसलिये वहाँ शिक्षकों, छात्रों और अन्य स्वयं सेवकों और कार्यकर्ताओं को प्रारंभ से ही स्वच्छता के कार्य में लगाया जाता था। गांधीजी ने इस बात पर जोर दिया कि ग्रामीणों को अपने आसपास और गाँव को साफ रखते हुए स्वच्छता का माहौल विकसित करने की तुरंत जरूरत के बारे में शिक्षित किया जाना चाहिये। सर्वोदय शब्द का अर्थ है 'सार्वभौमिक उत्थान' या 'सभी की प्रगति'। गांधी जी का यह सिद्धांत राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर जॉन रस्किन की पुस्तक 'अंटू दिस लास्ट' से प्रेरित था।सर्वोदय ऐसे वर्गविहीन, जातिविहीन और शोषणमुक्त समाज की स्थापना करना चाहता है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और समूह को अपने सर्वांगीण विकास का साधन और अवसर मिले।सर्वोदय ऐसी समाज की रचना चाहता है जिसमें वर्ण, वर्ग, धर्म, जाति, भाषा आदि के आधार पर किसी समुदाय का न तो संहार हो और न ही बहिष्कार हो।सर्वोदयी समाज की रचना ऐसी होगी, जो सर्व के निर्माण और सर्व की शक्ति से सर्व के हित में चले, जिसमें कम या अधिक शारीरिक सामर्थ्य के लोगों को समाज का संरक्षण समान रूप से प्राप्त हो और सभी तुल्य पारिश्रमिक के हकदार माने जाएँ।सर्वोदय शब्द गांधी द्वारा प्रतिपादित एक ऐसा विचार है जिसमें 'सर्वभूतहिते रताः' की भारतीय कल्पना, सुकरात की 'सत्य-साधना' और रस्किन की 'अंत्योदय की अवधारणा' सब कुछ सम्मिलित है। गांधीजी ने कहा था " मैं अपने पीछे कोई पंथ या संप्रदाय नहीं छोड़ना चाहता हूँ।"[9,10] यही कारण है कि सर्वोदय आज एक समर्थ जीवन, समग्र जीवन, तथा संपूर्ण जीवन का पर्याय बन चुका है। 20वीं सदी का आरंभ दुनियाभर में पर्यावरण को लेकर जागरुकता से हुई थी। प्रत्येक आंदोलन के अलग राजनीतिक विचार और सक्रियता थी, तथापि इन सभी आंदोलनों को आपस में जोड़ने वाली कड़ी अहिंसा और सत्याग्रह का गांधीवादी दृष्टिकोण ही था।पर्यावरण सुरक्षा गांधीवादी कार्यक्रमों का प्रत्यक्ष एजेंडा नहीं था। लेकिन उनके अधिकांश विचारों को सीधे तौर पर पर्यावरण संरक्षण से जोड़ा जा सकता है। हरित क्रांति, गहन पर्यावरण आंदोलन आदि ने गांधीवादी विचारधारा के प्रति कृतज्ञता स्वीकार की। आश्रम संकल्प (जिन्हें गांधी जी के ग्यारह संकल्पों के रूप में जाना जाता है) ही वे सिद्धांत हैं जिन्होंने गांधी की पर्यावरण संबंधी विचारधारा की नींव रखी थी। गांधी का स्वदेशी विचार भी प्रकृति के खिलाफ आक्रामक हुए बिना, स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों के उपयोग का सुझाव देता है। उन्होंने आधुनिक सभ्यता, औद्योगिकीकरण और शहरीकरण की निंदा की। गांधी ने कृषि और कुटीर उद्योगों पर आधारित एक ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था का आह्वान किया। भारत के लिये गांधी की दृष्टि प्राकृतिक संसाधनों के समझदारी भरे उपयोग पर आधारित है, न कि प्रकृति, जंगलों, नदियों की सुंदरता के विनाश पर।उनका प्रसिद्ध कथन "पृथ्वी के पास सभी की जरूरतों को पूरा करने के लिये पर्याप्त संसाधन हैं, लेकिन हर किसी के लालच को नहीं" दुनिया भर के पर्यावरणीय आंदोलनों के लिये एक उपयोगी नारा है।महात्मा गांधी की शिक्षाएँ आज और अधिक प्रासंगिक हो गई हैं जब कि लोग अत्याधिक लालच, व्यापक स्तर पर हिंसा और भागदौड़ भरी जीवन शैली का समाधान खोजने की कोशिश कर रहे हैं।प्रकृति को गांधीवादी नज़रिये से देखने पर वैश्विक तापन जैसी समस्याएँ कम हो सकती हैं, क्योंकि इस समस्या की जड़ उपभोक्तावाद ही है। गांधीवादी दर्शन में ज़रुरत के मुताबिक ही उपभोग की बात की है। लोक कल्याणकारी के रूप में राज्य की भूमिका गांधी जी के सर्वोदय सिद्धांत से प्रभावित है।सांप्रदायिक कट्टरता और आतंकवाद के इस वर्तमान दौर में गांधी तथा उनकी विचारधारा की प्रासंगिकता और बढ़ गई है, क्योंकि उनके सिद्धांतों के अनुसार सांप्रदायिक सद्भावना कायम करने के लिये सभी धर्मों-विचारधारों को साथ लेकर चलना ज़रूरी है। आज के दौर में उनके सिद्धांत बेहद ज़रूरी हैं।20वीं शताब्दी के प्रभावशाली लोगों में नेल्सन मंडेला, दलाई लामा, मिखाइल गोर्बाचोव, अल्बर्ट श्वाइत्ज़र, मदर टेरेसा, मार्टिन लूथर किंग (जू.), आंग सान सू की, पोलैंड के लेख वालेसा आदि ऐसे लोग हैं जिन्होंने अपने-अपने देश में गांधी की विचारधारा का उपयोग किया और अहिंसा को अपना हथियार बनाकर अपने इलाकों, देशों में परिवर्तन लाए। ध्यातव्य है कि इस समय पूरा विश्व कोरोना वायरस जैसी महामारी से लड़ रहा है। इस महामारी को पर्यावरण क्षरण, स्वच्छता में कमी तथा उपभोक्तावादी जीवनशैली जैसे कारकों का परिणाम माना जा सकता है। गांधीवादी दृष्टिकोण ने सर्वथा पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता, ज़रुरत के अनुसार ही उपभोग, आत्मनिर्भरता तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर ज़ोर दिया। इस संकट काल में गांधी के विचारों की महत्ता एक बार फिर स्थापित होती है। इस महामारी

ने एक अवसर प्रदान किया है कि हमें अपनी खाद्य श्रृंखला में बदलाव करते हुए गांधीवादी सिद्धांतों को अपनाने की आवश्यकता है। [11]

## परिणाम

आज हम परिवर्तन के युग के मध्य जीवन यापन कर रहे हैं। आज विश्व में जो कोई महान आंदोलन अथवा अवधारणा की बात कही जाती हैं उनमें महात्मा गांधी द्वारा प्रवर्तित आंदोलन व उनके मूल्य एवम प्रतीक ही सबसे अधिक परिवर्तन कर रहा है और जब वस्तुत: ऐसा परिवर्तन हो जाएगा और बडे पैमाने पर उसकी प्रतिष्ठा हो जाएगी तो वह सचमुच क्रांति होगी। महात्मा गांधी को एक फरिश्ता, एक युगद्दष्टा, समाज सुधारक, उदारवादी, एक संघर्षकर्त्ता, एक विचारक और अंतत: एक मानवतावादी के रूप में जाना जा सकता है। गांधी जी को ग्रामीण समुदाय के प्रति गहरा लगाव था। गांधी के युग में शहरीकरण और औद्योगीकरण के कारण गांवो का विकास ठप्प पड़ गया था और वे नष्ट होने लगे थे। तब उस समय उन्होने गांवो की आत्मनिर्भरता की वकालत की। गांधी जी का स्वर्णिम स्वप्न उनकी दृष्टि में फलदायी थी और उनके परिणाम भी सामने आये। स्वदेशी विचार की अवधारणा अत्यंत व्यापक है। महात्मा गांधी ने जिस स्वदेश की कल्पना की थी उसका अर्थ तत्कालीन राष्ट्र मे सभी विदेशी वस्तुओ के बहिष्कार से नही था, वे केवल स्थानीय संसाधनो के उपयोग की सीमाए लागू करना चाहते थे । विशेष रुप से गृह- उद्योग के अंतर्गत हस्तशिल्प, कुम्भकार आदि जिनके बिना भारत का विकास नही हो सकता था। "स्वदेशी का तात्पर्य उस भावना से है जो हमें अपने आसपास में निर्मित वस्तुओ के उपयोग तक से है। यह बाहर की वस्तुओ के प्रयोग का निषेध करता है। स्वदेशी एक धर्म है, एक कर्तव्य है जो हमें पैतृक धर्म की सीमा में अनुबंधित करता है। अगर इसमें कोई दोष है तो इसे सुधारना चाहिए। राजनीति के क्षेत्र में केवल स्वदेशी संस्थाओ के प्रयोग से है तथा उसमे जो खामियां हैं उसे हटाकर उसके उपयोग से है। आर्थिक क्षेत्र में उन्ही वस्तुओ के उपयोग से है जो आसपास में निर्मित होती हैं,तथा पडोस में बनने वाली वस्तुओ की गुणवत्ता में सुधार व उपयोग से है|" वर्ष 1905 ई. में बंगाल विभाजन के फलस्वरूप बंग भंग विरोधी आंदोलन भी स्वदेशी की भावना से ओत-प्रोत होकर विदेशी वस्तुओ का बहिष्कार किया था। देश व्यापी इस स्वदेशी भावना को व्यापक स्वरुप प्रदान करने का कार्य वर्ष 1920 में महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन प्रारम्भ करके किया।जिसके बाद उन्होने विदेशी वस्तुओ के बहिष्कार तथा उद्योग-शिल्प, भाषा, शिक्षा, वेश-भूषा आदि को स्वदेशी का स्वरुप को बढावा दिया गया। महात्मा गांधी की स्वदेशी सम्बंधी अवधारणा वर्तमान परिस्थितियों कोविड -19 जैसे विश्वव्यापी महामारी के दौर में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। गांधी जी की सर्वोदय योजना जो कि रस्किन की पुस्तक "अन टू दिस लास्ट" से इसके सिध्दांत को लिया गया था तथा उसे अपने जीवन में आत्मसात भी किया, इसके अतिरिक्त स्वदेशी व स्वच्छता के लिये गांधी जी ने संघर्ष किया जब सन 1895 में ब्रिटिश सरकार ने दक्षिण आफ्रीका में भारतीयो और एशियाई व्यापारियो से उनके स्थानो को गंदा रखने के आधार पर भेदभाव किया था, तब से लेकर जीवन भर गांधी जी लगातार स्वच्छता पर जोर देते रहे। गांधी जी की यह अवधारणा वर्तमान में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।[12]

वर्तमान में भारत सरकार की "आत्मनिर्भर भारत" की संकल्पना कही न कही गांधी जी की स्वदेशी आंदोलन की अवधारणा को चरितार्थ करती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने इतिहास को भुलाए बिना उसके दिखाए गए मार्ग पर चलकर कही ज्यादा मूल्यपरक विकास की ओर अग्रसर हो सकेंगे। गांधी जी के द्वारा हमारी आजादी के लिए किए गए सभी कार्य हमें सदैव प्रेरणा देते रहेंगे। गांधीजी भले ही आज हमारे बीच नहीं है लेकिन उनके विचार सदा सदा के लिए हमारे दिलों में जिंदा रहेंगे। विश्वभर में महात्मा गांधी सिर्फ एक नाम नहीं है बल्कि शांति और अहिंसा का प्रतीक है। सन 2007 से संयुक्त राष्ट्र संघ ने गांधी जयंती को "विश्व अहिंसा दिवस" के रूप में मनाने की घोषणा की। गांधीजी के बारे में प्रख्यात वैज्ञानिक आइंस्टीन ने कहा था कि- "हजार साल बाद आने वाली नस्लें इस बात पर मुश्किल से विश्वास करेंगी की हाड मांस से बना ऐसा कोई मनुष्य भी धरती पर कभी आया था।पो

वेददान सुधीर जी ने गान्धी जी का मूल्यान्कन करते हुए कहा है कि – "इंग्लैंड के बौध्दिक राजनेता क्रासमैन ने सुकरात को मृत्यु के अवसर पर कहा था- सुकरात को मृत्यु के लिए विवश किया जायेगा, उसकी मृत्यु को औचित्यपूर्ण भी माना जायेगा और परवर्ती पीढियां उसकी भर्त्सना भी करेंगी। इतिहास पुरूष सुकरात की भर्त्सना करके प्रत्येक पीढी अपनी हत्या करती है।" यही बात महात्मा गांधी पर भी लागू होती है। गांधी जी का अनादर हुआ, उन्हे धोखा दिया गया और अपने ही लोगो ने उन्हे मृत्यु की गोद में सुला दिया, किंतु उनके मरते ही लोगो ने यह सोचना शुरु कर दिया कि उनके पदचिन्हो पर न चलकर किस प्रकार का भारत सृजित होता है। और तब संविधान -निर्माताओ की एक मजबूत लाबी ने गांधीवादी सिद्धांतो पर आधारित संविधान निर्माण की बात कही। उन्होने संसदीय प्रजातंत्र, संघवाद एवं एक सशक्त केंद्रीय सरकार की धारणा का जबरदस्त विरोध किया। उनका तर्क था कि विदेशी संस्थाए समस्याओं को हल करके उन्हे बढाएंगी ही। आज हर स्तर पर भ्रष्टाचार , भाई-भतीजावाद, साम्प्रदायिकता और क्षेत्रवाद के पीछे गांधीवादी मूल्यों की अवहेलना की जाती है। गांधीवादी दर्शन में ही सभी बुराईयों के अंत को तलाशा जा सकता है।[13]

आधुनिक भारतीय चिंतकों में यद्पि अनेकानेक लेखकों एवं विचारकों ने योगदान दिया है किंतु आधुनिक भारत के निर्माताओ में युग पुरूष महात्मा गांधी का नाम एवं योगदान अद्वीतिय है। उन्होने आधुनिक विश्व को वह हथियार दिया जो स्वरूप में भारतीय होते हुए भी विश्व के सभी देशो द्वारा अपनाया जा रहा है। उनका सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह सम्बंधी विचार विश्व पटल पर छाया हुआ है। गांधी जी को राजनेता, मनीषी, विचारक, दार्शनिक, मानवतावादी, शांतिवादी और विश्वबंधुत्व के समर्थक आदि सब कुछ कहा जा सकता है किंतु सबसे ज्यादा महत्व उनका इस दृष्टि से है कि उन्होने विश्व को सत्य और अहिंसा का अक्षुण्ण एवं शाश्वत मार्ग बताया। डा. के एम. मुंशी ने गांधी जी के विषय में बताया है कि – " गांधी जी ने अराजकता पायी और उसे व्यवस्था में परिवर्तित कर दिया, कायरता पायी और उसे साहस में बदल दिया, अनेक वर्गो में विभाजित जनसमूह को राष्ट्र में बदल दिया, निराशा को सौभाग्य में बदल दिया और बिना किसी प्रकार की हिंसा या सैनिक शक्ति का प्रयोग किए एक साम्राज्यवादी शक्ति के बंधनों का अंत कर

विश्वशांति को जन्म दिया। इससे अधिक न तो कोई व्यक्ति कुछ कर सका है और न ही कर सकता है।"

## निष्कर्ष

आर्थिक स्तर पर गांधी जी स्वदेशी प्रणाली के समर्थक थे। गांधी ऐसी प्रणाली के समर्थक थे जिसके श्रम की महत्ता हो और सभी व्यक्ति को आजीविका का साधन मिल सके। जिनमे राष्ट्र अपने साधन और श्रम के उपयोग से आत्मनिर्भर बन सके। आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर होते हुए कुटीर उद्योग तथा लघु उद्योग की स्थापना की जा सके। गांधी जी के अनुसार ग्रामीण गरीबी को दूर करने के लिये खादी, चरखा, सूत कातने को बढावा दिया। गांधी जी ने देशवासियो को अपने अतिरिक्त समय में इन कार्यो को करने के लिये प्रोत्साहन दिया। व्यापक स्तर पर औद्योगीकरण व मशीनीकरण का विरोध किया। उनके ऐसी अवधारणा के पीछे का कारण यह था कि अविकसित देशों में व्यापक औद्योगीकरण से शोषण होता है। इसलिये उन्होने विदेशी वस्तुओ का बहिष्कार कर स्वदेशी पर विशेष बल दिया। ताकि ब्रिटिश शासन के आर्थिक आधार को समाप्त किया जा सके। आर्थिक संचय और भौतिकवादी पाश्चात्य सिध्दांत का उन्होने घोर विरोध किया। गांधी जी द्वारा बुनियादी शिक्षा पर जोर दिया गया। गांधी जी स्वदेशी शिक्षा के द्वारा देशव्यापी राष्ट्रीयता की भावना को उजागर किया। इससे आम जन ने अपने अधिकार को जाना यही कारण है कि राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान छात्रों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। [14] स्वदेशी भावना के तहत ही देवघर विद्यापीठ जैसे राष्ट्रीय स्कूल व कालेज खोले गए। स्वदेशी शिक्षा के तीव्र प्रसार हेतु गांधी जी ने ब्रिटिश भाषा की जगह भारतीय भाषा पर विशेष बल दिया। सन 1925 के कानपुर अधिवेशन में गांधी जी ने हिंदी से सम्बंधित प्रस्ताव पारित करवाया। इनका मानना था कि हिंदी भारत व्यापी अन्तर्क्षेत्रीय सम्पर्क की भाषा है। इसलिए हिंदी का विकास राष्ट्रवाद के विकास से जुड़ा है। गांधीजी ने भारती सभ्यता, संस्कृति और स्वदेशी परम्पराओं पर बल दिया। लेकिन वे सती प्रथा, अस्पृश्यता, लैंगिक भेदभाव के घोर विरोधी थे। गांधी जी ने पाश्चात्य संस्कृति के स्थान पर अपनी संस्कृति को बेहतर माना और अपनी जीवनशैली में सुधार लाते हुए भारतीय संस्कृति के अनुसरण पर विशेष जोर दिया। राजनितिक स्तर पर गांधी जी ने स्वराज सरकार अर्थात स्वदेशी सरकार पर बल दिया। गांधी जी ने विदेशी सत्ता और उनकी राजव्यवस्था का विरोध समय-समय पर बड़े स्तर पर किया। उनके अनुसार सत्ता का विकेंद्रीकरण ही समाज का सही मायने में विकास कर सकता है। गांधी जी भारत के लिए एक लोककल्याणकारी स्वदेशी व्यवस्था को आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया है। जिसे "रामराज्य" के रूप में जाना जाता है।[15]

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि गांधी जी भारत को एक सम्पूर्ण स्वदेश आधार प्रदान करना चाहते थे। महात्मा गांधी के स्वदेशी सम्बंधी विचार सर्वप्रथम भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान परिलक्षित हुए। इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति से सम्पूर्ण विश्व प्रभावित हो चुका था।ऐसे समय में भारत जैसे औपनिवेशिक देश इससे भी इसके चपेट में आ चुका था। भारत में स्वदेशी वस्तुओ के समर्थक इस बात पर जोर दे रहे थे कि इंग्लैंड में निर्मित वस्तुए भारत में आकर बेची जाती हैं जिससे भारत का धन ब्रिटेन को चला जाता है। अत: ऐसे औद्योगिक केंद्र भारत में स्थापित कर अपने ही देश में उत्पादन किया जाए। जिससे धन निष्कासन की समस्या का समाधान हो सके।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि गांधी जी ने भारतीय आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक आदि व्यवस्थाओं को स्वदेशी स्वरूप देकर भारत में व्याप्त निर्धनता को समरसता की प्रक्रिया द्वारा, संघर्ष को टालकर व्यवस्था को स्थापित करने का प्रयास किया। इसके लिए गांधी जी ट्रस्टीशिप के सिध्दांत को अपनाया। हर प्रक्रिया का आधार सामूहिक भागीदारी है। इसके अभाव में हर नियोजन के असफल होने की सम्भावना बढ जाती है । वर्तमान में भी गांधी के सिध्दांतो की महती आवश्यकता है।[16]

## संदर्भ


[1] भाना, सुरेन्द्र और गुलाम वाहेद.द मेकिंग ऑफ़ अ पोलिटिकल रिफोर्मार: गाँधी इन साऊथ अफ्रीका, १८९३-१९१४. नई दिल्ली: मनोहर, २००५

[2] बोंदुरंत्त, जुआअन वी. हिंसा की जीत: गाँधीवादी दर्शन का संघर्ष. प्रिन्सटन यूपी, १९९८ आईएसबीऍन ०-६९१-०२२८१-X

[3] चेर्नस, ईरा. अमरीकी अहिंसा: विचारों का इतिहास, सातवाँ अध्याय. आईएसबीऍन १-५७०७५-५४७-७

[4] चड्ढा, योगेश. गाँधी: एक जीवन. आईएसबीऍन ०-४७१-३५०६२-१

[5] डेलटन, डेनिस (ईडी). महात्मा गाँधी: चुनिन्दा राजनैतिक लेख. इंडियानापोलिस/कैमब्रिज: हैकट प्रकशन कंपनी (Hackett Publishing Company), १९९६ आईएसबीऍन ०-८७२२०-३३०-१

[6] गाँधी, महात्मा. महात्मा गाँधी के संचित लेख. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, सुचना एवम प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, १९९४.

[7] इश्वरण, एकनाथ (Eswaran, Eknath).गाँधी एक मनुष्य. आईएसबीऍन ०-९१५१३२-९६-६

[8] फिशर, लुईस. द एसेनसियल गांधी: उनके जीवन, कार्यों और विचारों का संग्रह. प्राचीन: न्यूयार्क, २००२. (पुनर्मुद्रित संस्करण), आईएसबीऍन १-४०००-३०५०-१

[9] गाँधी, एम.के. गाँधी के पाठक: उनके जीवन और लेखन का एक स्रोत पुस्तक.होमर जैक (ईडी) ग्रोव प्रेस, न्यू योर्क, १९५६

[10] गाँधी, राजमोहन. पटेल: एक जीवन. नवजीवन प्रकाशन घर, १९९० आईएसबीऍन ८१-७२२९-१३८-८

[11] हंट, जेम्स डी. लन्दन में गाँधी. नई दिल्ली: प्रोमिला एवं कंपनी, प्रकाशक, १९७८

[12] मान्न, बर्नहार्ड, महात्मा गाँधी और पाउलो फरेरी के शैक्षणिक अवधारणाएं. क्लौबें, बी, में. (ईडी) राजनैतिक समाजीकरण एव शिक्षा में अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन बीडी. ८.हैम्बर्ग १९९६.आईएसबीऍन ३-९२६९५२-९७-०

[13] रूहे, पीटर. गाँधी: एक छायाचित्र जीवनी. आईएसबीऍन ०-७१४८-९२७९-३

[14] शार्प, जीन. गाँधी एक राजनैतिक नीतिज्ञ के रूप में, अपने मूल्यों और राजनैतिक निबंधो के साथ. बोस्टन: एक्सटेंडिंग होराइज़ोन पुस्तकें, १९७९.

[15] सोफ्री, गियान्नी. गाँधी और भारत: केन्द्र में एक सदी (१९९५) आईएसबीएन १-९००६२४-१२-५

[16] गौरडन, हैम.आध्यात्मिक साम्राज्यवाद से अस्वीकृति: गाँधी को बूबर के पत्रों की झलकी. 'सार्वभौमिक अध्ययन की पत्रिका, २२ जून १९९९.